nbt.india
एकः सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

नवंबर 2013 वर्ष 18, अंक 11

जन्मदिन स्मरण : 15 नवंबर

गिजूभाई बधेका : बालकों के गाँधी

"नागों की पूजा का युग बीत चुका है। पत्थरों की पूजा का युग बीत चुका है। प्रेतों की पूजा का युग बीत चुका है। मानवों की पूजा का युग बीत चुका है। अब तो बालकों की पूजा का युग आया है। बालकों की सेवा ही उनकी पूजा है।"

ये शब्द हैं उस व्यक्ति के जिसका वास्तविक नाम था–गिरिजाशंकर भगवानजी बधेका, जो कालांतर में 'गिजूभाई' के नाम से प्रख्यात हुए। उन्हें 'बाल शिक्षा का स्वप्न पुरुष', 'बालकों का गाँधी' और 'मूँछों वाली माँ' कहकर पुकारा गया। उनके कार्यों की प्रकृति के कारण उन्हें ऐसे नाम मिले यह सहज-स्वाभाविक था।

ऐसे बालप्रेमी, बालसेवी, बाल-शिक्षा के पुरोधा गिजूभाई का जन्म 15 नवंबर, 1885 को सौराष्ट्र (गुजरात) के भावनगर के पास एक गाँव में हुआ था। पिता वकील थे। बड़े होकर उन्होंने भी वकालत शुरू की। लेकिन बच्चों की सेवा खातिर उन्होंने वकालत छोड़ दी। दरअसल, गिजूभाई का अपना बचपन भी बहुत आनंददायक नहीं था। मार-पीट, डाँट-डपट, उपेक्षा-उपहास उन्होंने भी झेला था। उन्होंने तय किया–बच्चों को सम्मानपूर्वक जीने का हक दिलाएँगे। उन्होंने बच्चों को समुचित और सम्मानपूर्ण लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा का 'स्वघोषित भार' अपने ऊपर ले

पृ. सं. 2 पर जारी...

कम-से-कम बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना हर व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है, जिसके बिना वह एक नागरिक के रूप में अपने कर्तव्य को पूरी तरह से नहीं निभा सकता।

जयंती, 11 नवंबर, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस **मौलाना अबुल कलाम आज़ाद**

बाल दिवस, 14 नवंबर पर विशेष

चिरयुवा होने का राज

पं. नेहरू से मिलने एक व्यक्ति आए। बातचीत के दौरान उन्होंने पूछा, "पंडित जी, आप 70 साल के हो गए हैं, लेकिन फिर भी हमेशा गुलाब की तरह तरोताजा दिखते हैं। जबकि मैं उम्र में आपसे छोटा होते हुए भी बूढ़ा दिखता हूँ।" इस पर हँसते हुए नेहरू जी ने कहा, "इसके पीछे तीन कारण हैं।" उस व्यक्ति ने आश्चर्यमिश्रित उत्सुकता से पूछा, "वह क्या?" नेहरू जी बोले, "पहला कारण तो यह है कि मैं बच्चों को बहुत प्यार करता हूँ। उनके साथ खेलने की कोशिश करता हूँ, जिससे मुझे लगता है कि मैं भी उनके जैसा हूँ। दूसरा कि मैं प्रकृतिप्रेमी हूँ और पेड़-पौधों, पक्षी, पहाड़, नदी, झरना, चाँद, सितारे सभी से मेरा एक अटूट रिश्ता है। मैं इनके साथ जीता हूँ और ये मुझे तरोताजा रखते हैं।" नेहरू जी ने तीसरा कारण दुनियादारी और उसके प्रति अपने नजरिये को बताया–"दरअसल, अधिकतर लोग सदैव छोटी-छोटी बातों में उलझे रहते हैं और उसी के बारे में सोचकर अपना दिमाग खराब कर लेते हैं। पर इन सबसे मेरा नजरिया बिलकुल अलग है और छोटी-छोटी बातों का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता।"

प्रस्तुति : कृष्ण कुमार यादव, इलाहाबाद

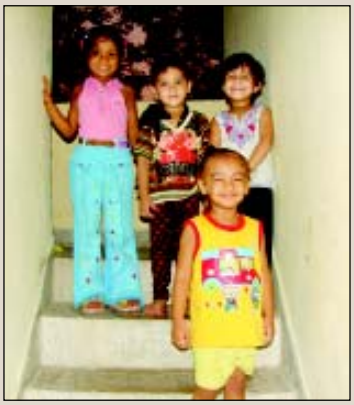

बाल दिवस में
बाल पताका
दिग-दिगंत तक
फहराए
भाल हमारी
भारत माँ का
कभी न झुकने पाए।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

शिक्षा का लक्ष्य ज्ञान में बढ़ोतरी और सत्य का प्रसार करना है। –जॉन एफ. केनेडी

लिया। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक संस्थाएँ एवं स्कूल खोले। बाल-शिक्षण के क्षेत्र में निरंतर नए-नए प्रयोग किए। उनका सपना था एक ऐसे शिक्षा-मंदिर की स्थापना का जहाँ बालकों का स्वतंत्र राज्य हो। 1922 में उन्होंने अपनी कल्पनाओं का एक सुंदर-सा बाल-मंदिर बनवाया। अब वे 'बालकों के पुजारी' बन गए। यहाँ बच्चे अपनी मरजी से कुछ भी करने को स्वतंत्र थे। गिजूभाई ने अपनी शिक्षा-नीति को पाँच सिद्धांतों पर आधारित किया था जिससे बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास समुचित ढंग से हो सके।

गिजूभाई ने इटली की प्रसिद्ध बाल शिक्षाविद् मेरिया मोंटेसरी से प्रेरणा पाई, लेकिन उनके विचारों को उन्होंने अपने ढंग से बनाया, सँवारा और अपनाया। बच्चों को कथा-कहानी सुनाना, उन्हें पूरा सम्मान देना, बात-की-बात में व्यावहारिक व नैतिक शिक्षा देना उनके अपने खास तरीके थे। 'बालक स्वयं अपना शिक्षक बन सकता है।' गिजूभाई ऐसा मानते थे। उनका कहना था—बालक को आजादी दो। इसका प्रयोजन यह है कि वह अपने शरीर, मन और आत्मा का विकास बिना किसी बाधा के कर सके। गिजूभाई ने लगभग 300 पुस्तकें लिखीं, अधिकतर शिक्षा और शिक्षणपरक। निधन 23 जून, 1939 को हुआ।

पूर्वांचली लोक आस्था का महान पर्व—छठ

पटना के घाट पर नरियर
नरियर किनबे जरूर
हाजीपुर से केरवा मँगाई के
अरघ देबे जरूर।...

छठ पर्व के अवसर पर यह लोक गीत आम तौर पर राह चलते छठ-व्रतियों के मुँह से सुनने को मिल जाता है। छठ पर्व यानी पूर्वांचल की एक बड़ी आबादी की लोक आस्था का पर्व। यह महापर्व सूर्य की उपासना से जुड़ा है जिसका मिथिला क्षेत्र में कुछ अधिक ही महात्म्य है। मिथिला आदिकाल से शक्ति का उपासक रहा है, अतः यह पर्व मूल रूप से शक्ति पूजन का प्रतीक है। यह पर्व सामाजिक सद्भाव का भी प्रतीक है, क्योंकि जिस वर्ग (शूद्र आदि) की परछाईं से भी प्राचीन काल में लोग खुद को बचाया करते थे उसी के द्वारा तैयार पात्र (सूप-डगरा व दउरा) में भगवान भास्कर को अर्घ्य अर्पित किया जाता है।

यह पर्व तीन दिनों का होता है। शुरुआत 'खरना' से होता है। इस दिन व्रती (स्त्री या पुरुष कोई भी) अन्न-जल कुछ भी ग्रहण नहीं करते। शाम को भगवती के समक्ष प्रसाद का भोग लगाकर खरना की परंपरा है। दूसरा दिन सांध्यकालीन सूर्य को किसी तालाब, जलाशय या नदी के किनारे, व्रती द्वारा पानी में खड़े होकर, अर्घ्य देने का चलन है। इस दिन 'घाट' (तालाब या नदी का किनारा) पर मेले का-सा दृश्य होता है। व्रतियों के परिजन, बच्चे आदि पटाखे छुड़ाते हैं। फिर यही दृश्य अगले यानी तीसरे दिन के सुबह का भी होता है। घाट पर उगते सूर्य को दूध ढारकर अर्घ्य दिया जाता है। व्रतियों के अलावे परिवार के अन्य लोग भी ऐसा करते हैं। सूर्योपासना के पश्चात घाट पर ही 'प्रसाद' (ठेकुआ, पुरकिया, केला, ईख, मूली, अदरख आदि) खाना शुरू हो जाता है। सभी परिजन व्रतियों के पाँव छूकर आशीर्वाद लेते हैं। फिर घर के पुरुष सदस्य अपने-अपने माथा (सिर) पर प्रसाद से भरी टोकरी रखकर घर लौट जाते हैं। व्रतियों का निर्जला उपवास इसी दिन खत्म होता है।

दरअसल, छठ की परंपरा रामायण और महाभारत काल से चली आ रही है। द्रौपदी के भी व्रत करने का प्रसंग है। मिथिलांचल-पूर्वांचल में छठ पर्व लोक आस्था का महान पर्व है। यह कृषि से भी जुड़ा हुआ है। प्रसाद रखने के सूप और टोकरी बाँस के बने होते हैं। इस पर्व में शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाता है। घाट पर जाते और आते समय व्रती और परिजन 'छठ माई' का गीत गाते हैं। 'छठि मइया आई न दुहरिया' शारदा सिन्हा का गाया प्रख्यात छठ गीत है। श्रद्धा का यह महापर्व अब बिहार-यूपी-दिल्ली की सीमा से परे कमोबेश भारत के हर प्रांत, यहाँ तक कि विश्व के उन देशों में भी मनाया जाने लगा है जहाँ-जहाँ इस क्षेत्रों के लोग गए हैं। छठ पर्व की महत्ता लगातार बढ़ती ही जा रही है।

भारत की दो आँखें होंगी, जिनसे उसकी जनता प्रकाश पाएगी—एक तो मातृभाषा तथा दूसरी राष्ट्रभाषा हिंदी। मातृभाषा तो अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग होगी, परंतु राष्ट्रभाषा हिंदी एक होगी जो भारत की सामान्य संपर्क भाषा होगी। हिंदी भाषा भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतीक होगी।

—आचार्य विनोबा भावे, पुण्यतिथि 15-11-1982

एक शिक्षित व्यक्ति किसी अशिक्षित से उतना ही अलग है जितना जीवित से मृत। —अरस्तू

पुण्यतिथि स्मरण : 28 नवंबर, 1890

जोतिबा फुले : आधुनिक सामाजिक क्रांति के अग्रदूत

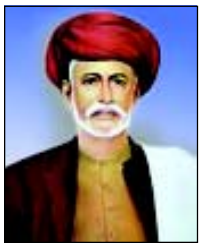

ज. : 11-4-1827
नि. : 28-11-1890

जोतिबा फुले का पूरा नाम जोतिराव गोविंदराव फुले था। वे दलित समाज और स्त्री समाज के सबसे बड़े पक्षधर, जुझारू नेता और हिमायती थे। वे एक शोषणमुक्त समाज की कल्पना करते थे और इसी प्रयास में उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। वे किसी जातिविशेष का विरोध न करके उस जातिविशेष के शोषणमूलक व्यवहार का विरोध करते थे। इस समतामूलक समाज की रचना के अपने स्वप्न को पूरा करने में सवर्णों का भी समान रूप से सहयोग लेते थे। वे प्रगतिशील और आधुनिक विचारों वाले एक दूरदर्शी समाजसेवी थे। उनका आचरण और दर्शन 'बहुजन हिताय' पर आधारित था। वे वंचितों और शोषितों के मसीहा थे। वे शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त अस्त्र मानते थे।

फुले के जीवन में वर्ष 1888 का बड़ा महत्व है। इस वर्ष उन्हें 'महात्मा' की उपाधि प्रदान की गई। ऐसा पहली बार हुआ कि शूद्र जाति में पैदा होने वाले किसी व्यक्ति को यह सम्मान मिला। गाँधी जी ने 1933 में कहा था–"फुले एक बड़े सामाजिक आंदोलन के अग्रदूत थे और वास्तविक अर्थों में महान थे।"

यह बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि 1891 में 'सार्वजनिक सत्यधर्म' नामक पुस्तक में उन्होंने 'सत्यमेव जयते' शब्द का प्रयोग किया था जो बाद में चलकर हमारा राष्ट्रीय ध्येय बन गया। हमारे राष्ट्रीय चिह्न 'अशोक स्तंभ' के नीचे यही शब्द उकेरा गया है।

फुले ने कहा था...

"शिक्षा के अभाव में बुद्धि गई, बुद्धि के अभाव में नीति गई,
नीति के अभाव में गति गई, गति के अभाव में धन गया,
और धन के अभाव में शूद्र हताश हुए और गुलाम होकर रह गए,
इतना अनर्थ अकेले शिक्षा के अभाव में हुआ।"

(फुले मानते थे कि शिक्षा के अभाव में शूद्रों का पतन हुआ है। अतः उनके उत्थान के लिए उनको शिक्षा धारण के प्रति प्रेरित करते हुए फुले ने यह कहा।)

पढ़ता, लिखता, हँसता बच्चा, किसी राष्ट्र की शान है
बच्चों को मजदूर बनाना, बचपन का अपमान है।

रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान

जन्मदिन स्मरण : 11 नवंबर

मौलाना आजाद : प्रखर शिक्षाविद्

स्वतंत्रता सेनानी एवं देश के प्रथम शिक्षा मंत्री, महान शिक्षाविद् मौलाना अबुल कलाम आजाद दूरदर्शी व्यक्तित्व के धनी एवं स्वाधीन भारत की शिक्षा-नीति के निर्माता भी थे। उन्होंने शिक्षा के आधुनिकीकरण एवं उच्च शिक्षा के स्तर में सुधार लाने के अनगिन कार्य किए। शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में उनका अवदान यही है कि आज संस्कृति के अनेक महत्वपूर्ण केंद्र एवं उच्च शिक्षा संस्थान उनके ही मनन, चिंतन एवं विचारणा की उपज हैं। खड़गपुर में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, साहित्य कला अकादमी, ललित कला अकादमी, संगीत नाटक अकादमी आदि की स्थापना में उनकी अग्रणी भूमिका रही। देश में तकनीकी शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराने की उनकी इच्छा को उनके इन शब्दों में देखा जा सकता है–वस्तुतः मैं उस दिन की आस लगाए बैठा हूँ जब भारत में तकनीकी शिक्षा की सुविधाएँ उस स्तर पर उपलब्ध होंगीं कि विदेशों से भी लोग उच्च वैज्ञानिक और तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भारत आया करेंगे।

दरअसल, स्वाधीन भारत की शिक्षा-नीति के निर्माण में मौलाना आजाद की अतुलनीय भूमिका रही है। ये मौलाना साहब ही थे जिन्होंने शिक्षा के महत्व की हिमायत की और बुनियादी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उसे हमारी प्रथम पंचवर्षीय योजना का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाया।

कृतज्ञ राष्ट्र सच ही ऐसे महापुरुष के जन्मदिन को 'राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' के रूप में मनाता है।

शब्द-शब्द हैं सीप के मोती
पुस्तक दीप की ज्योति है
इन दोनों से प्यार करो तो
हस्ती जगमग होती है।

लक्ष्मी विमल, पलामू, झारखंड

चाचा नेहरू को प्यारे थे फूल
और फूलों की महक
चाचा नेहरू को न्यारे थे बच्चे
और बच्चों की चहक

जब तक दुनिया में एक भी बालक दुखी है तब तक कोई भी खोज महान नहीं है, कैसी भी प्रगति महत्वपूर्ण नहीं है। –आइंस्टीन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत नवीनतम पुस्तकें

तारा

रचना सिद्धा

चित्र : शशि शेखर पिंटू पृ. 20 रु.14

तारा जब सोलह साल की ही थी उसकी शादी हो गई। जल्दी-जल्दी दो बच्चे भी हो गए, वह भी लड़कियाँ। ससुराल में पति, सास उसे ताना देने लगे। केवल ननद साथ देती। नासमझ पति उसे पीहर छोड़ आया। वहाँ उसने सिलाई-कढ़ाई सीखी, लिखना-पढ़ना भी। पति को पत्र भेजा। उसका विचार बदला। पत्नी को सम्मान से बुलाया। सब हँसी-खुशी रहने लगे। दोनों ने विचारा—बेटियों को खूब पढ़ाएँगे।

बालक की सीख

सुदर्शन वशिष्ठ

चित्र : दीपक दास पृ. 12 रु.12

यह पुस्तक पचमढ़ी कार्यशाला में तैयार हुई थी। इसे हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ कथाकार सुदर्शन वशिष्ठ ने लिखा है। लोक कथा पर केंद्रित यह पुस्तक बताती है कि हम सबको अपने घर के बुजुर्गों की हमेशा सेवा करनी चाहिए, न कि उनकी उपेक्षा। दादा जी और पोते का संवाद बड़ा रोचक है और मर्मस्पर्शी भी।

खुले मुँह वाला

जसवीर भुल्लर; अनु. : जसविंदर कौर बिंद्रा

चित्र : अरूप दत्ता पृ. 25 रु. 17

यह कहानी दहेज की समस्या पर आधारित है कि कैसे एक परिवार ने अपनी लड़की को दहेज के चंगुल से बचाया। यह पुस्तक हरियाणा-पंजाब साहित्य अकादमी, पंचकुला के सहयोग से चंडीगढ़ में एक कार्यशाला में तैयार की गई है। मास्टर सुच्चा सिंह का विचार था कि वह अपनी बेटी की शादी उस घर में करेंगे जहाँ दहेज के लिए कोई माँग न हो, बल्कि घर आए-गए अतिथि का सम्मान भी हो। भीतर तक हिला देने वाली एक मर्मस्पर्शी कहानी।

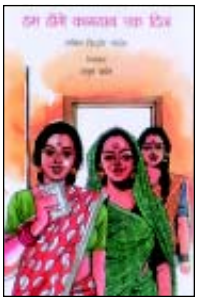

हम होंगे कामयाब एक दिन

ललित किशोर मंडोरा

चित्र : अतुल वर्धन पृ. 12 रु.12

यह पुस्तक महिला सशक्तीकरण पर केंद्रित है। किस प्रकार ममता ने अपने नशेड़ी पति की मौत के बाद बिखरते परिवार को सँभाला। चूँकि वह मेहनती थी, खाना बनाना जानती थी इसी शौक को उसने छोटे-से कारोबार में तब्दील किया और चीकू के जाने के बाद उसने घर को सँभाल लिया। पुस्तक बताती है कि कोई भी नशा अच्छा नहीं होता। इससे बचना चाहिए।

रिक्शेवाला

भूपिन्द्र सिंह बेदी; अनु. : धर्मपाल साहिल

चित्र : अरूप दत्ता पृ. 20 रु. 14

बिशना गरीब घर से था। माँ बीमारी में चल बसी थी। पिता ने स्कूल से नाम कटा दिया। चाय की दुकान पर बिशना पिटता और रोता। बड़ा हुआ, रिक्शा चलाने लगा। ऊपर से नशा करने लगा। पूरा मोहल्ला दुखी था। डॉक्टर ने कहा—नशा कभी किसी का सगा नहीं हुआ। बात बिशना को समझ आ गई। अब उसने ठान लिया था कि कभी भी नशा नहीं करेगा।

चिट्ठियाँ

बलजीत सिंह रैना

चित्र : अरूप दत्ता पृ. 16 रु. 12

बुजुर्ग गुलाबा आजकल दुखी रहता है। उसका बेटा छिंदा विदेश में नौकरी करता है। आजकल वहीं रहता है। उसने गाँव का घर भी पहले की तुलना में ठीक करवा दिया है। अकेला गुलाबा क्या करता! पहले से आई बेटे की चिट्ठियाँ पढ़ता और आँसू बहाता। अकेलेपन को लेकर दिल को छू जाने वाली एक बेजोड़ कहानी। हमें अपने बुजुर्गों को समय देना चाहिए। वे आपसे और कुछ नहीं चाहते।

ज्ञान का दीप जलाना है

प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

फैला है अज्ञान, वहाँ पर ज्ञान का दीप जलाना है
हमको पुस्तक का उजियारा हर घर तक पहुँचाना है
जहाँ निराशा, मायूसी है, और मुरझाये चेहरे हैं
वहाँ हमें अब खुशहाली का, नव संसार बसाना है।

जीने योग्य बनाती शिक्षा

डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय', कोटा, राजस्थान

हृदय-हृदय में मानव गुण विकसाती शिक्षा
नैतिकता के शिखरों तक पहुँचाती शिक्षा
काट सघन बर्बरता के जंगल को जग से
भव को सुख से जीने योग्य बनाती शिक्षा।

किताबों के संग चलो, एक नया सूरज उगा लो।

दीपावली की शुभकामनाएँ

नरेश हमिलपुरकर

दीपावली की सबको हार्दिक शुभकामनाएँ
ईश्वर करे पूरी हों सबकी सारी मनोकामनाएँ
जग में सदा हँसी-खुशी, प्रेम-भाईचारा रहे
शांति-प्रगति रहे हर पल और हर दिशाएँ
निराशा-दुख-दर्द की साया तक न पड़े कभी
क्या नहीं है यदि है सद्कर्म, धर्म, आशाएँ
सुबह होते-होते जग उजियारा तो होगा, पर
मन का घोर तम हरने सत्य की ज्योति जलाएँ
दया-दान-क्षमा से बढ़कर कोई संपत्ति नहीं
आदमी वही जो सुख-दुख दोनों को अपनाए
मात-पिता की सेवा से श्रेष्ठ पूजा प्रार्थना नहीं
इनकी इच्छा-पूर्ति में जीवन सारा बीत जाए
अतीत को भूलकर उज्ज्वल भविष्य बनाएँ
आनंद हर्षोल्लास से हर दिन पर्व मनाएँ।

चिटगुप्पा, बीदर, कर्नाटक

वह चाचा नेहरू थे

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बच्चों से था जिनको प्यार
बच्चों में बसता था संसार
बच्चों के थे सच्चे यार
वह चाचा नेहरू थे।

मन के थे बड़े सच्चे
उनसे खुश रहते थे बच्चे
काम करते अच्छे-अच्छे
वह चाचा नेहरू थे।

बच्चों पर जो जान छिड़कते थे
बच्चों को जो महान समझते थे
बच्चों पर जो अपना प्यार छिड़कते थे
वह चाचा नेहरू थे।

गाँधी-कुरता कोट पजामा पहनते थे
कोट में गुलाब का फूल, सर पर टोपी लगाते थे
देश के प्रथम प्रधानमंत्री कहलाते थे
वह चाचा नेहरू थे।

चौदह नवंबर जिनका जन्मदिन कहलाता
बच्चों के लिए यह दिन 'बाल दिवस' कहलाता
भारत का जो ऊँचा नाम कर गए
वह चाचा नेहरू थे।

गोरखपुर, उ.प्र.

दीप जलाएँ

डॉ. रामनिवास 'मानव', हिसार, हरियाणा

हँसें-हँसाएँ
घर-आँगन में नन्हे-नन्हे
फूल खिलाएँ
दीप जलाएँ।

राह दिखाएँ
गली-गली में, हर कोने में
जोत जगाएँ
दीप जलाएँ।

ध्वजा उठाएँ
ज्ञान-गुणों की अलख जगाकर
भूत भगाएँ
दीप जलाएँ।

आस जगाएँ
सुंदर-सुंदर सपने देखें
और दिखाएँ
दीप जलाएँ।

दीप जले हैं

रमेशचंद्र पंत, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

झिलमिल,
दीप जले हैं।

घर-आँगन की हुई सफाई
खुश धरती पर सारे,
उमड़ पड़े धरती पर लगता
आसमान के तारे।

ज्योतित,
फूल खिले हैं।

फुलझड़ियाँ चल रहीं चतुर्दिक
चलते खूब पटाखे,
भाए हैं पकवान-मिठाई
छाए खील-बतासे।

तम के
रूप ढले हैं।

पुस्तक को संगी बना उड़ लो / चाँद, तारे, आसमान छू लो।

जयंती : 19 नवंबर (1828)

रानी लक्ष्मीबाई

जयंती : 15 नवंबर (1875)

बिरसा मुंडा

जयंती : 9 नवंबर (1877)

मो. इकबाल

जयंती : 27 नवंबर (1907)

हरिवंश राय बच्चन

जयंती : 19 नवंबर (1917)

इंदिरा गाँधी

राष्ट्रीय पक्षी दिवस (12 नवंबर)

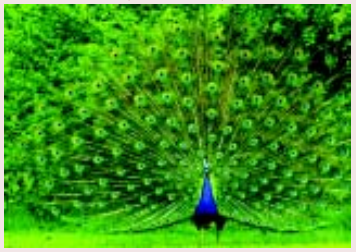

राष्ट्रीय पक्षी मोर

सब शिक्षित हों, सभी सुखी हों
सबके सपने हों साकार
जगमग शिक्षा-दीप जले तो
हट जाएगा अंधकार।

रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान

दीप हमें एक
नया जलाना है
शिक्षा का हमें
अलख जगाना है।

प्रकाश भानु महतो, सरायकेला, झारखंड

शिक्षा से अंधकार
रहता है दूर
शब्द ही बनता है
आँखों का नूर!

सिद्धेश्वर, पटना, बिहार

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ! मैं आपकी पत्रिका से जुड़ना चाहता हूँ। कर्नाटक सहित दक्षिण भारत में हिंदी/साक्षरता के प्रचार-प्रसार में सहयोग करने का इच्छुक हूँ।

नरेश हमिलपुरकर, चिटगुप्पा, बीदर, कर्नाटक

(आप हमें पत्र लिखते हैं, रचनाएँ भेजते हैं। **साक्षरता संवाद** स्वयं पढ़ते हैं, दूसरों को भी पढ़वाते हैं। आप इस तरह से हिंदी भाषा और साक्षरता प्रसार में सहज ही सहयोगी बने हुए हैं। तो भी, आवश्यकता पड़ने पर आपका और सहयोग हम लेंगे। आपकी इस सदिच्छा का हम सम्मान करते हैं। **–संपा.**)

☐ **सा. सं. : अक्तू. अंक :** इस अंक का अवलोकन करने पर इसमें समाहित सामग्री रोचक, पठनीय, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय लगे। नवसाक्षरों के लिए सामग्री प्रेरणादायक और उपयोगी हैं। महान विभूतियों पर सरल, संक्षिप्त लेख अच्छे लगते हैं। रानी चेनम्मा, गाँधी जी व शास्त्री जी पर प्रस्तुत लेख एवं संस्मरण सहित अन्य रचनाएँ भी प्रासंगिक एवं उपयोगी थे।

डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष', चेन्नै, तमिलनाडु

☐ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी व लाल बहादुर शास्त्री पर संक्षिप्त संस्मरण प्रेरक लगे। सामयिक व प्रासंगिक तिथियों पर दी गई जानकारी संक्षिप्त किंतु उपयोगी थे। कविताएँ पसंद आईं। महज आठ पृष्ठों की इस पत्रिका में बहुत कुछ पढ़ने को मिल जाता है। पत्रिका गागर में सागर-समान है। **बद्री प्रसाद वर्मा अनजान,** गोरखपुर, उ.प्र.

☐ संपूर्ण अंक ज्ञानवर्धक है। नवसाक्षरों और साक्षरताकर्मियों के लिए ही नहीं, साक्षरों और उच्च शिक्षित युवा-बुजुर्ग सबों के लिए उपयोगी, ज्ञानवर्धक और प्रेरणाप्रद है यह पत्रिका।

किशन लाल शर्मा, आगरा, उ.प्र.

☐ गाँधी, पटेल, इंदिरा जी, शास्त्री जी, कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, रानी चेनम्मा–ये सभी हमारे राष्ट्र की नींव के पत्थर हैं। जयंती/पुण्य तिथि पर इन्हें याद करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। हम इनके आदर्शों पर चलते रहें, आज इसी संकल्प की आवश्यकता है। पृ. 5 व 7 पर प्रस्तुत कविताएँ समयानुकूल एवं अच्छी लगीं। शिक्षा का आलोक अज्ञानता के हर चौखट तक पहुँचे, यही कामना है। **आनंद बिल्थरे,** प्रेमनगर, बालाघाट, म.प्र.

☐ **सा. सं. : सितं. अंक :** पत्रिका सर्वांगीण ज्ञानवर्धक है। साक्षरता का प्रचार-प्रसार महती कार्य है जिसे आपके द्वारा पूर्ण निष्ठा से किया जा रहा है। **मोहन लोधिया,** जबलपुर, म.प्र.

☐ एक भारतीय किशोरी, रजिया को संयुक्त राष्ट्र का सम्मान प्राप्त हुआ, इसकी सूचना प्रेरक है। जिस बहादुर लड़की, मलाला के नाम पर यह सम्मान उसे दिया गया है वह उचित ही था। आखिर, दोनों के कार्य और रास्ते एक ही थे–शिक्षा का प्रचार-प्रसार। और भी लड़कियों में रजिया और मलाला जैसा ही जज्बा और जुनून पैदा हो, यही कामना है। **दुर्गा प्रसाद शर्मा,** बुलंदशहर, उ.प्र.

☐ होशंगाबाद (म.प्र.) निवासी पं. गिरि मोहन गुरु 'नगरश्री' के सौजन्य से **साक्षरता संवाद** का सितं. '13 का अंक पहली बार पढ़ने को मिला। पत्रिका काफी लंबे अरसे से प्रकाशित हो रही है, लेकिन मैं इसके पठन से वंचित रहा। इसका मुझे अफसोस है। पत्रिका कलेवर में छोटी है, किंतु ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणापरक है। साक्षरता अभियान के लिए यह एक अच्छी पत्रिका है। इसके पठन-पाठन से लाखों पाठक लाभान्वित होंगे।

गिरिवर गिरि गोस्वामी निर्मोही, पंखा रोड, नई दिल्ली

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

भाई-बहिन चलें स्कूल

सुगनचंद्र जैन 'नलिन'

अब मिलकर भाई-बहिन चलें स्कूल
आज से अनपढ़ रहने की करें न भूल
इधर-उधर के कामों में नहीं लगाएँ ध्यान
ईश्वर कृपा से साक्षर हों, बनें नेक इनसान।

उपकार करें सबका, पाकर सद्ज्ञान
ऊटपटाँग बातों से रहें सदा अनजान
एक-दूजे का मिलकर साथ निभाएँ
ऐसा सुंदर भाव हृदय में लाएँ।

ओछापन जीवन में कभी न आए
और परहित से मन न कभी घबड़ाए
अंकनी से करें सभी जन प्यार
'नलिन' पढ़-लिखकर बनें सभी होशियार।

गुना, म.प्र.

साक्षरता के दीप

रामेश्वर प्रसाद गुप्त 'इंदु'

साक्षरता के दीप को, चलो जलाएँ आज
उजियारे से दूर हो, अँधियारे का राज
अँधियारे का राज, सभी अभिशाप मिटाएँ
पढ़-लिखकर निज राष्ट्र, प्रगति सुख राह दिखाएँ
इंदु जगाएँ और, दूर हो सब निरक्षरता
होगा वहीं विकास, जहाँ होगी साक्षरता।

बड़ागाँव, झाँसी, उ.प्र.

शिक्षा आई आपके द्वार

दयाकान्त सक्सैना

शिक्षा आई आपके द्वार
मोय पट्टी मँगवा दे
मैं तो पढ़ने जाऊँ आज
मोय बस्ता मँगवा दे।
राधा जा रही, कान्हा जा रहे
जा रहे लोग लुगाई
मैं भी पढ़ने जाऊँगी, तू सुन ले मेरी माई
अब तो साक्षरता की बयार
मोय पट्टी मँगवा दे।
भइया जा रहे, बहना जा रही
जा रहे भइया-भौजी
मैं भी पढ़ने जाऊँगी, तू सुन ले मेरी जीजी
गीता जा रही, सलमा जा रही
जा रहे हैं सब भइया
टिफिन लगा दे, बस्ता दे दे, सुन ले मेरी मइया
मैं तो पढ़ने जाऊँ आज
मोय पट्टी मँगवा दे।

हरदेवनगर, धौलपुर, राजस्थान

हस्ताक्षर

सुरेंद्र 'अंशुल'

अनपढ़ता को दूर भगाओ
पढ़ना-लिखना जरा सीखो तुम
कब तक तुम अंगूठा लगाओगे
अब हस्ताक्षर करना सीखो तुम।

अंबाला शहर, हरियाणा

शिक्षा-ज्योति

अशोक 'आनन'

भारत माँ के हम हैं बच्चे
सबको गले लगाएँगे
नफ़रत की जो खड़ी दीवारें
उनको आज गिराएँगे।

दीपक बनकर मानव-मन के
तम को आज हटाएँगे
पतझर को हम हटा चमन से
बहार नई नित लाएँगे।

पढ़ा-लिखाकर अनपढ़ को हम
शिक्षा-ज्योति जलाएँगे
सूरज बनकर आज धरा पर
नई सुबह हम लाएँगे।

मक्सी, शाजापुर, म.प्र.

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह
(14 से 20 नवंबर, 2013) मनाएँ
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के संग

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/11/2013

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें
अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकें

सूची-पत्र मँगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत
nbt.india

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070